तासगांव। त्रिपुरा के राज्यपाल महामहिम डॉ.डी.वाय.पाटील, महाराष्ट्र के राज्य गृहमंत्री आर.आर.पाटील व विधायक संजय पाटील को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.डॉ.वैशाली।

अलकापुरी (बड़ौदा)। 'मूल्यनिष्ठ समाज स्थापना अभियान' का दीप प्रज्ज्वलित कर उद्घाटन करते हुए नगरपालिका के चेयरमैन डॉ.विजय शाह, शंकरलाल त्रिवेदी साथ में हैं ब्र.कु.डॉ.निरंजना तथा अन्य।

मीरजापुर। 'तनाव प्रबंधन एवं परमात्म अनुभूति शिविर'को संबोधित करते हुए ब्र.कु.ऊषा तथा मंचासीन हैं श्रम आयुक्त सीताराम मीणा, कमिश्नर वेकटेश्वर लू, ब्र.कु.सुरेन्द्र एवं ब्र.कु.परनीता तथा अन्य।

भांडुप (वेस्ट)। ब्र.कु.मीता को 'स्मृति चिन्ह' भेंट कर सम्मानित करते हुए मासिक टॉनिक के संपादक मानकर तथा अन्य।

आहवा-डांग (गुजरात)। 'सद्भावना मिशन' कार्यक्रम में मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.साधना साथ में हैं ब्र.कु.मधु तथा अन्य।

पुणे। अभिनेत्री रानी मुखर्जी को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.सोनल साथ में हैं ब्र.कु.जिगिषा व ब्र.कु.दीपक।

अहम्, वहम् और रहम

...पृष्ठ 7 का शेष

योग के मार्ग पर मनुष्य को वहमी स्वभाव का नहीं होना चाहिए। वहमी मनुष्य संगठन में सदा ही उखड़ा-उखड़ा सा रहता है। योग में उसका मन नहीं लगता। उसका जीवन भी मुरझायें फूलों की तरह दिखाई देता है। संक्षेप में यों कहें कि वहमी व्यक्ति न जीवन में सफल होता और न साधना के मार्ग पर अपनी मंजिल को पाता है। वह विश्वास और अविश्वास के दौराहे पर भटकता रहता है।

रहम मनुष्य का एक श्रेष्ठ गुण है। जहां रहम है वहीं मानवता है और जहां निर्दयता है वहां दानवता है। कहा जाता है - जिस दिल में रहम नहीं, वह दिल तो पत्थर है। ऐसा पत्थर जो कभी भी नहीं पिघलता। मानव हृदय रहम से भरपूर होना होना ही चाहिए। यदि मानव रहमदिल नहीं तो उसमें व जानवरों में कोई अंतर नहीं।

हमें राजयोग द्वारा शिवबाबा रहमदिल बनना सिखाते हैं कि बच्चे! अनेक मनुष्य अंधकार में भटक रहे हैं, अज्ञान के कारण उनका जीवन पतित व दु:खी है, उन्हें सुख नहीं भास रहा है, तुम भगवान के बच्चे उन पर रहम करो, उन्हें प्रकाश दो, उन्हें ज्ञान का तीसरा नेत्र दो।

तो यदि भटकते मनुष्यों को देखकर हमारे मन में रहम की भावना नहीं जागती तो हमारे ज्ञान का क्या लाभ? हमें तो प्रकृति के तत्वों पर भी रहम करना है अर्थात् उन्हें भी पावन बनाना है। इससे पूर्व हमें स्वयं पर रहम करना है अर्थात् स्वयं की श्रेष्ठ स्थिति बनानी है। हमें दूसरों के रहम पर नहीं जीना है, बल्कि रहमदिल बनकर सभी की मदद करनी है। कहावत है जो स्वयं पर रहम नहीं करता वह भला दूसरों पर क्या रहम करेगा?

तो हम रहमदिल बाप के रहमदिल बच्चे हैं। जैसे भगवान ने हम पर रहम किया है, हम दूसरों पर रहम करें। रहमदिल आत्मायें ही प्रजा पालक बन सकेंगी और ऐसी आत्मायें ही भविष्य में विश्व की बागडोर सम्भालेंगी।

आगामी प्रोग्राम

कला एवं संस्कृति प्रभाग

कला एवं संस्कृति प्रभाग की वार्षिक कॉन्फ्रेंस 11 से 15 मई 2012 को ज्ञान सरोवर में होगी। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें - मोबाइल नं. - 09422175053, 09828699737 ई-मेल:- artandculturewing@gmail.com

ग्राम विकास प्रभाग

ग्राम विकास प्रभाग की वार्षिक कॉन्फ्रेंस 25 से 29 मई 2012 को ज्ञान सरोवर में होगी। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:- मोबइल नं. - 09414154151 ई-मेल:- ruralwing@bkivv.org, ruralwing@gmail.com

सेवा ऐसी अग्नि है जिससे शुद्धिकरण होता है

भगवान पुन: अर्जुन को कहते हैं कि अभी तक भी तुम्हारा मोह दूर नहीं हुआ है और इसलिए तुम मेरे अवतरण होने के रहस्य को समझ नहीं पा रहे हो। अर्जुन पुन: तीसरी बार भगवान से सवाल पूछता है कि कौन आपको जान सकता है? भगवान कहते हैं कि जो रजो गुण स्वभाव वाले होते हैं वो मुझ परमात्मा को नहीं जान पाते हैं। दूसरी बार जब पूछा तो कहा कि जो मोह से ग्रस्त, राग-द्वेष, काम, क्रोध के वश है वो मुझे नहीं जान पाते हैं। तीसरी बार जब अर्जुन ने पूछा, तो कौन जानते हैं? भगवान पुन: उसका उत्तर देते हैं - जो मोह से मुक्त, दैवी प्रकृति अर्थात् दैवी संस्कारों के आधार से जीने वाले हैं वे मुझे अनादि, अविनाशी स्वरूप में जानकर अन्नन्य भाव से याद करते हैं। वह दृढ़ता पूर्वक नित्य योगयुक्त रहने का पुरुषार्थ करते हैं। इसलिए जितना व्यक्ति अपने मोह के जाल से मुक्त होता है, वही परमात्मा के अनादि स्वरूप को समझ पाता है। तब वह योग-युक्त रहने के पुरुषार्थ करने में लग जाते हैं और वो भी दृढ़ता पूर्वक पुरुषार्थ करने लग जाते हैं। दृढ़ता बहुत आवश्यक है क्योंकि दृढ़ता के बिना सफलता को प्राप्त नहीं कर पायेंगे। साधारण संकल्पों से अगर पुरुषार्थ करना आरंभ कर दिया तो बार-बार मोह की रस्सियाँ उसको खींचती रहेगी। इसलिए वो उस पुरुषार्थ में तीव्र गति से आगे बढ़ नहीं पायेंगे। जितना तीव्र गति से समय परिवर्तन हो रहा है, उतना तीव्र गति से हमें भी पुरुषार्थ करने की आवश्यकता है। भगवान आगे बताते हैं कि जो ज्ञान का अध्ययन के साथ एक तो योगयुक्त रहता है, दृढ़ता पूर्वक पुरुषार्थ करता है, मोह से मुक्त होता है। फिर कहा कि जो ज्ञान का अध्ययन करते हैं, सोमरस पान करते हैं और यज्ञ सेवा करते हैं। वे पापकर्म से शुद्ध होकर पवित्र स्वर्ग धाम में जन्म लेते हैं। इस संसार से जैसे ही वे आत्मायें प्रयाण करती है तो वे पवित्र स्वर्ग धाम में जन्म लेती हैं। जहाँ वे देव पद का आनंद भोगते हैं। इसीलिए कहा जाता है कि ''मनुष्य से देवता किए करत लागे न वार'' भगवान को परिवर्तन करने में कोई देर नहीं लगती है। नर से श्री नारायण, नारी सो श्रीलक्ष्मी समान बनाना ये भगवान के लिए कोई बड़ी बात नहीं है। लेकिन कैसे बनाते हैं ये नहीं कि कोई जादू की छड़ी घुमा दी और व्यक्ति को नर से नारायण और नारी से लक्ष्मी

गीता ज्ञान का आध्यात्मिक रहस्य

-वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, ब्र.कु.उषा

बना दिया। नहीं, इसके लिये पुरुषार्थ बहुत जरूरी है। जो जिस गति से और जितनी शक्ति से पुरुषार्थ करते हैं उतना ही वो आगे बढ़ सकते हैं। उसके लिए जैसे कहा ज्ञान का अध्ययन और सोमरस अर्थात् अमृत पान, ज्ञान अमृत है। ये अमृत पान करते हैं। यज्ञ सेवा करते हैं अर्थात् अपने शुद्धिकरण के प्रोसेस में जो नित्य लगकर के दूसरों को भी प्रेरणा देते हैं ये है बड़ी सेवा। किसी के जीवन को सुधारने के लिए, उसको दिशा बताने के लिए आत्म शुद्धिकरण की ओर उससे बड़ी सेवा और कोई हो नहीं सकती। तो वो सर्व पाप कर्मों से छूट जाते हैं क्योंकि सेवा एक ऐसी अग्नि है जिसमें शुद्धिकरण होता है। शुद्धिकरण से वो पवित्र स्वर्ग धाम में जन्म लेता है। अर्थात् नर से नारायण पद को प्राप्त करता है। लेकिन जैसे-जैसे पुण्य क्षीण होते जाते हैं, तो पुन: सतयुग से उसकी यात्रा आरंभ हो जाती है और कलियुग तक आ जाती है। जिस प्रकार संसार का भी ये नियम है कि कोई भी चीज नयी बनाते है, तो नयी से पुरानी होना ये स्वाभाविक है। एक मकान नया बनाओ तो पुराना अपने आप हो जाता है। बाजार से कपड़ा ले आओ, यूज न भी करो, कपड़ा कपाट में रख दो दस साल। फिर दस साल के बाद निकालो, तो क्या कहेंगे कि ये दस साल पुराना है। थोड़ा खीचेंगे फटने लगेगा! यूज भी नहीं किया फटने कैसे लगा! ये कुदरत का नियम है। कोई भी चीज सदा स्थायी एक ही स्थिति में नहीं रह सकती है। इसलिए जैसे ही स्वर्ग धाम को प्राप्त करते हैं। उसके बाद जैसे-जैसे जन्म लेते हैं तो हर जन्म में अपने पुण्य कर्म के आधार से समय व्यतीत करते हैं। तो वो पुण्य क्षीण तो होगा। आज व्यक्ति बैंक बैलेंस जमा करता है। रिटायर होऊंगा तो उसके बाद मैं उस बैंक बैलेंस को यूज करूंगा। रिटायर अवस्था में मुझे काम आयेगा। जब रिटायर हुआ, तो उसमें अब जमा नहीं हो रहा है। लेकिन जो है उसको उठा-उठाकर खायेगा तो जमा किया हुआ धन कम होगा कि नहीं होगा। ठीक इसी प्रकार जैसे ही व्यक्ति पुरुषार्थ करता है। कल्प के अंत में, अपना आत्म-शुद्धिकरण करता है और उस आत्म-शुद्धिकरण से स्वर्ग में पवित्र धाम में जाकर देव पद को प्राप्त करता है। वहां जो जन्म है, वो जैसे कि बैंक बैलेंस जमा किया हुआ है, जो वो खाने कार्य करता है। जैसे-जैसे वह उसे उठा-उठाकर खाते जाता है तो क्या होता है? उसका पुण्य कम होने लगता है और इस तरह वह अंत में पुन: मृत्युलोक में आ जाता है। (क्रमश:)